वर्धा योजना [1937] :— उस समय राष्ट्र का नेतृत्व गांधी जी के

हाथों में था। उन्होंने 11 Aug 1937 के अखबार, प्रान्तीय सरकारों को 7-14 वर्ष के बच्चों की शिक्षा का भार अपने ऊपर लेने का सुझाव दिया। इसके बाद उन्होंने 2 Oct. 1937 ई० के 'हरिजन' [एक प्रकार का समाचारपत्र] में लिखा कि प्राथमिक शिक्षा 7 वर्ष या इससे अधिक समय की हो और इसमें अंग्रेजी को छोड़कर वे सब विषय पढ़ाये जाये, जिन्हे हाईस्कूल परीक्षा के लिए पढ़ाया जाता है। साथ ही किसी उद्योग को अनिवार्य रूप मे पढ़ाया जाये। गांधी जी के इन विचारों से देश में एक नई शैक्षिक क्रांति का शुभारम्भ हुआ।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन वर्धा :—

23 Oct. 1937 को वर्धा में मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की रजत जयंती मनायी जाने वाली थी। श्रीमन्नारायण अग्रवाल इसके आयोजक थे। गांधी जी ने इस अवसर पर एक शिक्षा सम्मेलन आयोजन करने का सुझाव दिया। अग्रवाल साहब ने इस अवसर पर भारत के चोटी के शिक्षाशास्त्रि के विचारकों और राष्ट्रीय नेताओं को आमंत्रित किया और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया इसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन भी कहा जाता है। इस सम्मेलन का सभापति स्वयं गांधी जी थे। सभापति पद से बोलते हुए गांधी जी ने अपने शैक्षिक विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा को अपव्यय पूर्ण एवं हानिप्रद बताया। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में सात (7) मूलभूत बातें बतायी।

A Quality Product from Chitra

1. पहली यह कि देश में 7-14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हो।
2. शिक्षा सभी के लिए समान हो।
3. शिक्षा देश की ग्रामीण जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।
4. इसमें भाषा, गणित, आदि की शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को सफाई, स्वास्थ्य रक्षा, माता-पिता के कार्यों में हाथ बंटाने की शिक्षा दी जायेगी।
5. शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा होना चाहिए।
6. इसमें कृषि और भारतीय हस्त कौशलों की शिक्षा दी जाये।
7. समस्त शिक्षा हस्तकौशलों के माध्यम से दी जाये और शिक्षा को स्वावलम्बी बनाया जाये।

गाँधी जी के इन विचारों पर खुलकर चर्चा हुयी और निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए।

1. शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा हो।
2. शिक्षा किसी हस्त कौशल के माध्यम से दी जाये।
3. 7-14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
4. इस स्तर का पाठ्यक्रम बच्चों की अपनी आवश्यकता के आधार पर बनाया जाये।
5. शिक्षा स्वावलम्बी हो। स्कूल में होने वाले उत्पादन से शिक्षकों के वेतन का भुगतान किया जा सके।

अतः अखिल भारतीय वर्धा शिक्षा सम्मेलन वर्धा में प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा योजना को अंतिम रूप देने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिती का गठन किया गया। इसे 'जाकिर हुसैन समिती' कहा जाता है। इस समिती ने अपनी रिपोर्ट दो भागों में प्रस्तुत किये।

प्रथम रिपोर्ट Dec. 1937 ई. में और द्वितीय रिपोर्ट अप्रैल 1938 ई. में प्रस्तुत किया। वर्धा फरवरी

A Quality Product from Chitra